॥ श्रीः ॥

विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

१०

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीदेवेश्वराचार्यपूज्यपादशिष्यश्रीसर्वज्ञात्ममुनिप्रणीतम्

(पञ्चप्रक्रियासहितम्)

सङ्क्षेपशारीरकम्

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीसुन्दरदासोदासीनपूज्यपादशिष्यश्रीस्वामिरामानन्दकृत-

भावदीपिकाख्यहिन्दीव्याख्योपेतम्

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिरामानन्दोदासीनपूज्यपादशिष्यवेददर्शनाचार्य-

महामण्डलेश्वरस्वामिगङ्गेश्वरानन्दमहाभागविरचित-

वृहद्भूमिकासनाथम्

स्वामियोगीन्द्रानन्देन टिप्पण्यादिभिः समलङ्कृत्य सम्पादितम्

प्रकाशक :

चौखम्बा विद्याभवन

चौक, वाराणसी-२२१००१

विषय-सूची

क्र०	विषय	पृष्ठांक
	(प्रथम अध्याय)	
१.	मङ्गलानुष्ठान	१
२.	विचार-फल-निरूपण	१७
३.	ग्रन्थारम्भ-समर्थन	२२
४.	बन्धाध्यास-निरूपण	२२
५.	अध्यास-कारण-निरूपण	२६
६.	ब्रह्मविचार की अगतार्थता	५०
७.	अधिकारी-निरूपण	५४
८.	वाक्यार्थ में विरोध-प्रदर्शन	७३
९.	वाक्यार्थ में विरोध-निरास	१०१
१०.	अखण्डार्थ-बोध-क्रम	१२७
११.	लक्ष्यार्थ-निरूपण	१३०
१२.	ब्रह्म की औपनिषदत्व-प्रतिज्ञा	१५१
१३.	अखण्डार्थ-व्यवस्थापन	१६१
१४.	अधिकारी के लिए श्रद्धा की अनिवार्यता	१६२
१५.	वेदान्त की प्रमाणान्तर-निरपेक्षता	१६६
१६.	अज्ञान-स्वरूप-निरूपण	१८६
१७.	वेदान्त की कार्यपरता का निराकरण	१९८
१८.	इष्टसाधनत्वरूप लिङर्थ-निरूपण	२०८
१९.	शुद्ध पदार्थ में पद-शक्ति-निरास	२११
२०.	अभिहितान्व और अन्विताभिधान का अनुपयोग	२१५
२१.	सिद्ध में साध्यार्थता	२१७
२२.	निषेध वाक्यों में कार्य-परत्वाभाव	२२५
२३.	ज्ञान में विधेयत्व का अभाव	२४८
२४.	सगुण-वाक्योंका निर्गुण में समन्वय	२५५
२५.	वेदान्त की सिद्धार्थता में जैमिनि के विरोध का परिहार	२५९
२६.	कार्यत्वहेतु से चेतन-जन्यत्व का अनुमान	२७१
२७.	जगत में एकप्रकृतिकत्व का साधन	२७३
२८.	स्वरूप लक्षण, विशेष लक्षण	२८०
२९.	गुणभूत पदों में उपलक्षणार्थत्व	२८२
३०.	लक्षण-प्रयोजन-निरूपण	२८५
३१.	लक्षण-समय लक्ष्यस्वरूप-निश्चय	२८७
३२.	अनुवादकता के बल पर चेतन-कारणता के विधान की कल्पना	२८९
३३.	जन्मादि-वाक्यों में ब्रह्मानुमान का निराकरण	२९०
३४.	समन्वय का उपसंहार	२९५
	(द्वितीय अध्याय)	
१.	समन्वय में प्रत्यक्षादि का विरोध	३०३
२.	समन्वय में प्रत्यक्षादि के विरोध का परिहार	३०६
३.	वेदान्त-वाक्यों की एकात्मपरता	३१०
४.	अध्यस्त होने पर भी प्रपञ्च में सत्य-मिथ्या-विभाग	३१३
५.	विज्ञानवाद के साम्य का खंडन	३१४
६.	स्वप्न और जाग्रत की समता का निरास	३१७
७.	वेदान्त-मत से भिन्न मतों में सत्य-मिथ्या-विभाग की अनुपपत्ति	३२०
८.	अनात्म-प्रत्यक्ष की अतात्त्विकता	३२३

क्र०	विषय	पृष्ठांक
९.	परिणामवाद	३२८
१०.	विवर्तवाद	३३३
११.	वैशेषिक मत का खण्डन	३३५
१२.	आरोपादि त्रिविध दृष्टिका निरूपण	३३८
१३.	परभावी वाक्यों से पूर्वभावी वाक्यों की दुर्बलता	३५४
१४.	संसार की केवल ज्ञान-निवर्त्यता	३५९
१५.	बन्ध-मोक्ष-व्यवस्था	३६१
१६.	ब्रह्म ही अज्ञान का आश्रय है	३७८
१७.	जीव और ईश्वर का वैलक्षण्य	३८०
१८.	बन्ध-मोक्ष-व्यवस्थापक शास्त्रों का प्रामाण्य-रक्षण	३९७
१९.	कल्पित शास्त्रोंमें भी तत्त्व-बोधकता	४०१
२०.	वेदान्त-मत में पूर्व काण्ड का प्रामाण्य-व्यवस्थापन	४११

(तृतीय अध्याय)

१.	ज्ञान के साधनों का निरूपण	४१३
२.	जीव का संसरण-निरूपण	४१६
३.	अपवर्ग-साधन-निरूपण	४३८
४.	तत्त्वंपदार्थ-शोधन	४४०
५.	त्वंपद-लक्ष्यार्थ-प्रदर्शन	४४७
६.	तत्पद-लक्ष्य-निरूपण	४७८
७.	ऐश्वर्यादि की आत्मरूपता का निरास	४८१
८.	'उत्पत्ति' शब्द का अर्थ	५०१
९.	जगत की अभिव्यक्ति का खण्डन	५०५
१०.	मायावाद से अतिरिक्त कार्य-कारणभाव की अनुपपत्ति	५०८
११.	जगत् के प्रकाशक की व्यवस्था	५१२
१२.	अन्योऽन्याध्यास-निरूपण	५१५
१३.	वेद की जन्यता का खण्डन	५१६
१४.	तत्त्वंपदार्थ-शोधन	५३०
१५.	अवान्तर वाक्यों की इयत्ता	५४३
१६.	विधि-निषेध वाक्यों की विलक्षणता	५४७
१७.	अन्तरङ्ग-बहिरङ्ग साधन-निरूपण	५४९
१८.	ज्ञान की उत्पत्ति का अनियम	५५७
१९.	अन्तरङ्ग-बहिरङ्ग साधनों की विशेषता	५५८
२०.	परिव्राजक को इस जन्म में ही ज्ञान-फल का लाभ	५६१
२१.	संन्यास का उपयोग	५६२

(चतुर्थ अध्याय)

१.	बोध से फल-निष्पत्ति का प्रकार	५६४
२.	ज्ञान-कर्म-समुच्चय का निरास	५६७
३.	अविद्या-निवृत्ति का स्वरूप-निरूपण	५६८
४.	मोक्ष की कूटस्थ नित्यता	५७५
५.	जीवन्मुक्ति का समर्थन	५७९
६.	शिष्य का कृतज्ञता-प्रकाश	५८३
७.	ईश्वरार्पण	५८७